International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा का वर्तमान शिक्षा में आवश्यकता एवं योगदान : एक वैचारिक अध्ययन

Dr. R. S. Mishra

Professor, Department of Education

सारांश (Abstract):

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्ध ज्ञान प्रणालियों में से एक है, जिसने मानव जीवन के बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक विकास को समग्र दृष्टि प्रदान की। वेद, उपनिषद, बौद्ध एवं जैन दर्शन, आयुर्वेद, योग, ज्योतिष, गणित तथा गुरु-शिष्य परंपरा भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख आधार रहे हैं। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में तकनीकी उन्नति के बावजूद नैतिक मूल्यों का ह्रास, मानसिक तनाव, सांस्कृतिक विघटन तथा मानवीय संवेदनाओं में कमी जैसी समस्याएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। ऐसे परिवेश में भारतीय ज्ञान परंपरा आधुनिक शिक्षा को संतुलित, मूल्यपरक एवं जीवनोपयोगी दिशा प्रदान कर सकती है।

प्रस्तुत शोध-पत्र में वर्तमान शिक्षा में प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा की आवश्यकता एवं उसके योगदान का वैचारिक विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा केवल सूचना या ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसका उद्देश्य मानव व्यक्तित्व का समग्र विकास, सामाजिक उत्तरदायित्व, नैतिक चेतना एवं आत्मानुभूति का विकास करना था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी भारतीय ज्ञान प्रणाली, मातृभाषा आधारित शिक्षा, योग, नैतिक मूल्यों एवं सांस्कृतिक चेतना को विशेष महत्व प्रदान किया गया है। अतः आधुनिक शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

मुख्य शब्द (Keywords): भारतीय ज्ञान परंपरा, वर्तमान शिक्षा, गुरुकुल व्यवस्था, योग, नैतिक शिक्षा, भारतीय संस्कृति, नई शिक्षा नीति 2020।

1. प्रस्तावना (Introduction):

भारत प्राचीन काल से ही ज्ञान, दर्शन एवं शिक्षा का वैश्विक केंद्र रहा है। Nalanda University, Takshashila एवं Vikramashila University जैसे विश्वविद्यालयों ने विश्वभर के विद्यार्थियों एवं विद्वानों को आकर्षित किया। भारतीय शिक्षा व्यवस्था का मूल उद्देश्य केवल व्यावसायिक दक्षता विकसित करना नहीं था, बल्कि मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास को सुनिश्चित करना था।भारतीय ज्ञान परंपरा "सा विद्या या विमुक्तये" की अवधारणा पर आधारित रही है, जिसका अभिप्राय है कि शिक्षा व्यक्ति को अज्ञान, बंधनों एवं संकीर्णताओं से मुक्त करे। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रतियोगिता, तनाव, नैतिक पतन, बेरोजगारी, सामाजिक असमानता तथा सांस्कृतिक विस्मरण जैसी समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। शिक्षा का स्वरूप अधिकतर परीक्षा एवं रोजगार केंद्रित हो गया है, जिसके कारण जीवन-मूल्यों एवं मानवीय संवेदनाओं का ह्रास दिखाई देता है।ऐसी स्थिति में प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा आधुनिक शिक्षा को नई दिशा प्रदान कर सकती है। यह परंपरा केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं, बल्कि मानव जीवन को संतुलित एवं मूल्यपरक बनाने का आधार रही है।

2. अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of the Study):-

1. प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा की अवधारणा एवं स्वरूप का अध्ययन करना।
2. वर्तमान शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा की आवश्यकता का विश्लेषण करना।
3. आधुनिक शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा के योगदान का अध्ययन करना।
4. नई शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रासंगिकता का विश्लेषण करना।

3. शोध पद्धति (Research Methodology):-

प्रस्तुत शोध-पत्र द्वितीयक स्रोतों पर आधारित वैचारिक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन है। अध्ययन के लिए पुस्तकों, शोध-पत्रों, पत्रिकाओं, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, UGC एवं NCERT से संबंधित दस्तावेजों तथा विभिन्न शैक्षिक स्रोतों का उपयोग किया गया है।

4. प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा : अर्थ एवं स्वरूप : -

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा से आशय उस ज्ञान प्रणाली से है, जो वेदों, उपनिषदों, स्मृतियों, पुराणों, दर्शन, आयुर्वेद, योग, ज्योतिष, साहित्य, कला एवं संस्कृति पर आधारित है। यह ज्ञान प्रणाली मानव जीवन के समग्र विकास पर बल देती है। भारतीय शिक्षा में ज्ञान का उद्देश्य केवल सूचना प्राप्त करना नहीं था, बल्कि आत्मबोध, चरित्र निर्माण एवं समाज कल्याण की भावना विकसित करना था।भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा को जीवनोपयोगी, अनुभवात्मक एवं व्यवहारिक माना गया। गुरु-शिष्य संबंध इस व्यवस्था की विशेषता थी, जिसमें शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान के साथ-साथ नैतिक अनुशासन एवं सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करना था।

5. भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रमुख विशेषताएँ

5.1 आध्यात्मिक एवं नैतिक आधार : - भारतीय शिक्षा व्यवस्था सत्य, अहिंसा, करुणा, सेवा, त्याग एवं सहिष्णुता जैसे नैतिक मूल्यों पर आधारित थी। इसका उद्देश्य व्यक्ति को आदर्श नागरिक बनाना था।

5.2 गुरु-शिष्य परंपरा : - गुरु और शिष्य के मध्य आत्मीय संबंध भारतीय शिक्षा की मूल विशेषता थी। गुरु केवल शिक्षक नहीं, बल्कि मार्गदर्शक एवं चरित्र निर्माता होते थे।

5.3 सर्वांगीण विकास : - भारतीय शिक्षा शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास पर समान रूप से बल देती थी।

5.4 अनुभवात्मक एवं व्यवहारिक शिक्षा : - शिक्षा को व्यवहार से जोड़कर प्रस्तुत किया जाता था। विद्यार्थियों को आत्मनिर्भरता एवं श्रम की महत्ता सिखाई जाती थी।

5.5 प्रकृति के साथ सामंजस्य : - भारतीय परंपरा प्रकृति को पूजनीय मानती है। पर्यावरण संरक्षण एवं प्राकृतिक संतुलन पर विशेष बल दिया गया।

6. वर्तमान शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा की आवश्यकता

6.1 नैतिक मूल्यों के विकास हेतु : - वर्तमान समाज में भ्रष्टाचार, हिंसा, असहिष्णुता एवं नैतिक पतन जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा नैतिक मूल्यों के माध्यम से व्यक्ति में मानवीय गुणों का विकास करती है।

6.2 मानसिक तनाव एवं अवसाद से मुक्ति : - प्रतियोगी शिक्षा प्रणाली के कारण विद्यार्थियों में मानसिक तनाव एवं अवसाद की समस्या बढ़ रही है। Yoga एवं ध्यान विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को संतुलित करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

6.3 सांस्कृतिक संरक्षण हेतु: - वैश्वीकरण एवं पाश्चात्य प्रभाव के कारण युवा अपनी सांस्कृतिक जड़ों से दूर होते जा रहे हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा सांस्कृतिक चेतना एवं राष्ट्रीय पहचान को मजबूत बनाती है।

6.4 सर्वांगीण विकास हेतु: - आधुनिक शिक्षा अधिकतर रोजगार एवं परीक्षा केंद्रित हो गई है, जबकि भारतीय ज्ञान प्रणाली व्यक्ति के समग्र विकास पर बल देती है।

6.5 पर्यावरणीय चेतना के विकास हेतु: - आज पर्यावरण संकट विश्व की गंभीर समस्या है। भारतीय परंपरा प्रकृति एवं पर्यावरण संरक्षण का संदेश देती है।

6.6 मूल्य आधारित शिक्षा के लिए: - भारतीय ज्ञान परंपरा मानवता, विश्वबंधुत्व एवं सामाजिक समरसता की भावना विकसित करती है। "वसुधैव कुटुम्बकम्" की अवधारणा आज भी अत्यंत प्रासंगिक है।

7. वर्तमान शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा का योगदान

7.1 गुरुकुल शिक्षा पद्धति का योगदान: - गुरुकुल व्यवस्था विद्यार्थियों में अनुशासन, आत्मनिर्भरता एवं नैतिक मूल्यों का विकास करती थी। वर्तमान आवासीय विद्यालयों एवं मूल्य आधारित शिक्षा में इसकी झलक दिखाई देती है।

7.2 योग एवं ध्यान का योगदान: - योग आज विश्वभर में स्वास्थ्य एवं मानसिक संतुलन का प्रभावी माध्यम बन चुका है। विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में योग शिक्षा विद्यार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाती है।

7.3 आयुर्वेद का योगदान: - Ayurveda भारतीय चिकित्सा प्रणाली का महत्वपूर्ण अंग है, जो प्राकृतिक एवं संतुलित जीवन शैली पर बल देता है।

7.4 गणित एवं विज्ञान में योगदान: - भारतीय विद्वानों ने गणित एवं विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। शून्य, दशमलव प्रणाली एवं खगोल विज्ञान की अवधारणाएँ भारतीय ज्ञान परंपरा की देन हैं।

7.5 भाषा एवं साहित्य का योगदान: - Sanskrit भाषा एवं भारतीय साहित्य नैतिकता, दर्शन एवं सांस्कृतिक चेतना के संवाहक हैं।

7.6 मूल्य आधारित शिक्षा का योगदान: - भारतीय शिक्षा में "सर्वे भवन्तु सुखिनः" एवं "वसुधैव कुटुम्बकम्" जैसे आदर्शों के माध्यम से विश्वबंधुत्व एवं मानवता की भावना विकसित की जाती है।

8. भारतीय ज्ञान परंपरा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

National Education Policy 2020 में भारतीय ज्ञान प्रणाली को विशेष महत्व दिया गया है। नीति में भारतीय भाषाओं, कला, संस्कृति, योग, नैतिक शिक्षा एवं अनुभवात्मक अधिगम को बढ़ावा देने की बात कही गई है।

नीति के अंतर्गत—

- मातृभाषा आधारित शिक्षा
- भारतीय भाषाओं का संरक्षण
- योग एवं नैतिक शिक्षा
- बहुविषयी एवं समग्र शिक्षा
- कौशल आधारित अधिगम
- भारतीय संस्कृति एवं परंपराओं का समावेश

जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं पर बल दिया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि आधुनिक शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा की उपयोगिता को पुनः स्थापित किया जा रहा है।

9. निष्कर्ष (Conclusion):-

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा आधुनिक शिक्षा व्यवस्था को मानवीय, नैतिक एवं सांस्कृतिक आधार प्रदान करती है। यह केवल ज्ञान प्राप्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यक्ति को आत्मनिर्भर, जिम्मेदार एवं नैतिक नागरिक बनाने की प्रक्रिया है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में बढ़ती प्रतिस्पर्धा, मानसिक तनाव, सांस्कृतिक विघटन एवं नैतिक पतन जैसी समस्याओं के समाधान हेतु भारतीय ज्ञान परंपरा अत्यंत प्रासंगिक है।यदि आधुनिक शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा के सिद्धांतों, जैसे योग, नैतिक शिक्षा, गुरु-शिष्य संबंध, अनुभवात्मक अधिगम एवं सांस्कृतिक मूल्यों को समाहित किया जाए, तो विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास संभव होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। अतः आवश्यकता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा को विद्यालयी एवं उच्च शिक्षा स्तर पर प्रभावी रूप से लागू किया जाए।

10. सुझाव (Suggestions):-

1. विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में योग एवं ध्यान को नियमित रूप से शामिल किया जाए।
2. पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा एवं भारतीय संस्कृति को अनिवार्य बनाया जाए।
3. गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के सकारात्मक तत्वों को आधुनिक शिक्षा में समाहित किया जाए।
4. भारतीय भाषाओं एवं संस्कृत के अध्ययन को प्रोत्साहित किया जाए।
5. शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित विषयों को शामिल किया जाए।
6. मूल्य आधारित एवं अनुभवात्मक शिक्षा को बढ़ावा दिया जाए।

11. संदर्भ सूची (References) :-

1. Aggarwal, J. C. (2014). *Shiksha ka Darshanik evam Samajshastriya Aadhar*. Agra: Vinod Pustak Mandir.
2. Government of India. (2020). *National Education Policy 2020*. New Delhi: Ministry of Education.
3. Mishra, R. K. (2021). Nai Shiksha Niti aur Bharatiya Gyan Pranali. *International Journal of Education*, 8(2), 66–74.
4. NCERT. (2022). *Bharatiya Gyan Parampara evam Shiksha*. New Delhi: NCERT Publications.
5. Patanjali. *Yogasutra*.
6. Radhakrishnan, S. (2009). *Bharatiya Darshan*. New Delhi: Rajpal & Sons.
7. Sharma, Ramnath. (2012). *Bharatiya Shiksha ka Itihas*. Meerut: Surya Publication.
8. Singh, B. N. (2018). Bharatiya Gyan Parampara aur Adhunik Shiksha. *Shaikshik Chintan Shodh Patrika*, 12(3), 45–52.
9. UNESCO. (2021). *Education and Cultural Heritage*. Paris: UNESCO Publications.
10. Vedas and Upanishads.